© UNIVERSAL RESEARCH REPORTS | REFEREED | PEER REVIEWED
ISSN : 2348 - 5612 | Volume : 05 , Issue : 01 | January – March 2018

# हिन्दी साहित्य में आंचलिक एवं मनोविज्ञान उपन्यास :एक विवेचना

[1]अर्जुन सिंह ,शोधार्थी , हिंदी विभाग, डी एस बी परिसर , कुमाऊँ विश्वविद्यालय नैनीताल
[2] डॉ शिरीष कुमार मौर्य , हिंदी विभाग, डी एस बी परिसर , कुमाऊँ विश्वविद्यालय नैनीताल

**सार**

हिन्दी साहित्य के इतिहास की लोकप्रिय विधा उपन्यास है। उपन्यास शब्द को अंग्रेजी में नावेल, मराठी में कादम्बरी तथा गुजराती में नवलक कथा कहा जाता है उपन्यास शब्द दो शब्दों के योग से बना है। 'उप तथा 'न्यास का अर्थ होता है – सजाना या सुशोभित करना। 'उप संस्कत का उपसर्ग है जो शब्दों के पूर्ण आकार, समीपता, नजदीक या पास आदि का द्योतक है। न्यास शब्द नि भी एक संस्कत का उपसर्ग है "उपन्यास की संज्ञा एसी रचना को दी जा सकती है जिसे पढकर अपने जीवन की वास्तविक यथार्थवादी प्रकियाओं का आभास हो और निकटता की अभिव्यक्ति हो।

ISSN : 2348-5612 © URR

**मुख्य शब्द :** इतिहास, उपन्यास, आंचलिक, आदि ।

**प्रस्तावना**

'अंचल' शब्द का सीधा और स्पष्ट अर्थ है जनपद या प्रदेश विशेष। इस शब्द से एक वैशिष्ट्यपूर्ण भू–भाग का बोध होता है, जो अपनी कतिपय विशेषताओं जैसे भौगोलिक स्थिति, प्राकृतिक विशेषताओं, सामाजिक एवं आर्थिक दाँचों आदि के कारण अन्य प्रदेशों से पृथक दिखाई पड़ते हैं। "अंचल' शब्द से आंचलिक विशेषण बना है तथा आंचलिक शब्द के साथ, ता प्रत्यय जुड़कर 'आंचलिकता' भाववाचक संज्ञा का निर्माण हुआ है। अंचल का कोशगत अर्थ या सामान्य बोलचाल की भाषा में अर्थ है– आंचल साड़ी का किनारा या छोर। भौगोलिक संदर्भ में इसका अर्थ है – जनपद, भूखंड अथवा देश का वह भाग जो सीमा के पास हो इत्यादि ।साहित्यिक संदर्भ में इसका अर्थ है – किसी देश के भीतर के उस जनपद या भू–प्रदेश से है जिसका सामान्य नागरिक सुसभ्य, सुंसस्कृत जीवन के प्रभाव से अछूता हो, जिसकी अपनी लोकभाषा, विशिष्ट संस्कृति एवं लोक परंपराएँ हो तथा जिसकी अन्य अंचलों से पृथक पहचान की जा सकें यहाँ यह कहना समीचीन होगा कि "अंचल शब्द का यह अर्थ, इसके कोशगत अर्थ से भिन्न है।

आंचलिकता एक प्रवृति है जिसके मूल में, किसी विशिष्ट क्षेत्र के जन–जीवन को तटस्थ दृष्टि से देखने की प्रबल आकांक्षा विद्यमान रहती है। इस प्रवृत्ति के पीछे एक विशिष्ट भू–माग भी हो सकता है और उस पर रहनेवाला एक विशिष्ट समाज भी। किसी भी अंचल के बाह्य रूप से आंतरिक स्वरूप तक पहुंचने के लिए प्राकृतिक वातावरण, आंचलिक जीवनयापन एवं अंचलवासियों के मनोजगत् की जानकारी अनिवार्य है। इन सबके माध्यम से उस अंचल में व्याप्त चेतना अभिव्यक्त होती है। आंचलिक उपन्यासकार एक ऐसे समाज का साक्षात्कार करवाने का प्रयास करता है जो अपरिचित, अज्ञात एवं सभ्यता की दौड़ से पिछड़ चुका है। अंचल जीवन से संबंधित यह अपरिचित जीवन, प्रकृति की गोद में धूल और कीचड़ से सने, अपनी ही पीड़ाओं, अभावों में फलित एवं पुष्पित होते हैं।

**परिभाषा**

हिन्दी साहित्य कोश के अनुसार आँचलिक उपन्यासों का अर्थ इस प्रकार है "कुछ उपन्यासों में किसी प्रदेश विशेष का यथातथ्य और बिम्बात्मक चित्रण प्रधानता प्राप्त कर लेता है और उन्हें प्रादेशिक या आँचलिक कहा जाता है।"

**मनोविज्ञान उपन्यास**

मनोविज्ञान अनुभव का विज्ञान है इसका उद्देश्य चेतनावस्था की प्रक्रिया के तत्त्वों का विश्लेषण, उनके परस्पर संबंधों का स्वरूप तथा उन्हें निर्धारित करनेवाले नियमों का पता लगाना है।

हिन्दी साहित्य विविध उपन्यासों से अटा पटा है। यद्यपि उपन्यास विधा पर्याप्त विलम्ब से हिन्दी में आई फिर भी जिस तीव्रता से सम्पूर्ण साहित्य का कण्ठाहार बनी यह अत्यन्त श्लाघ्य है। वास्तव में प्रेमचन्द से पूर्व ही उपन्यास पाठकों में अभिरुचि उत्पन्न करने में सफल हो गया था फिर भी प्रेमचन्द के बाद उपन्यास जितना लोकप्रिय हुआ शायद ही उतनी कोई विधा लोक प्रिय हुई हो। प्रेमचन्द ने न केवल उपन्यास को लोकप्रिय बनाया अपितु हर तरह के उपन्यासों के लिए एक आदर्श भी प्रस्तुत किया।

**इतिहास**

19 वीं सदी के फ्रांसीसी लेखक Stendhal के अग्रदूतों में से एक मनोवैज्ञानिक उपन्यास। Stendhal अच्छा मनोवैज्ञानिक वर्णन है, वह बाकी सब की उपेक्षा करने के लिए मनोवैज्ञानिक घटना, के साथ व्यस्त था। मनोवैज्ञानिक उपन्यास मनोवैज्ञानिक विवरण 19 वीं शताब्दी में मनोविज्ञान के विकास के स्तर को दर्शाते हैं। उनकी मनोवैज्ञानिक विवरण मन और तर्कसंगत विश्लेषण की भावनाओं को सीमित चेतना सोच के मनोवैज्ञानिक स्तर, है, अवचेतन परत प्रतिबिंब की शारीरिक स्थिति को शामिल नहीं करता. इस प्रकार, वह जिससे चरित्र यथार्थवाद की विशेषताओं और ताकत दिखा रहा है, बहुत शांत और तर्कसंगत मनोवैज्ञानिक विवरण, तर्क और कारण से भरा है। सामग्री स्तर में स्टेंडहल की मनोवैज्ञानिक विवरण व्यापक मानसिक हालत और प्यार सूक्ष्म परिवर्तन और विकास की प्रक्रिया के मनोविज्ञान का मानसिक दृष्टिकोण, विस्तृत विश्लेषण के युग का वर्णन, सामाजिक और मनोवैज्ञानिक प्यार के दो स्तरों में विभाजित है। अक्षर आंतरिक तनाव पर उसका प्रदर्शन पहले से ही आधुनिक चेतना का लक्षण है। यह अंत करने के लिए, वह के रूप में जाना जाता था "आधुनिक कथा के पिता।" क्योंकि वह दुनिया में है कि "आधुनिकता" ने प्रदर्शन किया उसकी मानसिक जागरूकता की अभी भी एक विस्तृत पाठक है। प्रतिनिधि "लाल" (1830) है।

**निष्कर्ष**

हिन्दी उपन्यास की पृष्ठभुमि में पंचतंत्र जातक कथा बहद कथा. वासवदत्ता हर्ष चरित कादम्बरी हितोपदेश तिलक मंजरी बहत कथा मंजरी कथा सरितसागर पथ्वीराज रासों बिसलदेव रासों, पदमावत –आधि आखूयान ग्रन्थों को हम हिन्दी साहित्य में उपन्यास की पर्व भ्रमिका कह सकते हैं हिन्दी के पारंभिक उपन्या सों का उद्देश्य पाठकों को कल्पनालोक में घुमने तथा उनका मनोरंजन मात्र करना होता था। आचार्य हजारीप्रसाद द्विवेदी जी के अनुसार "हिन्दी साहित्य का सब से नया और शक्तिशाली रूप उपन्यासों में प्रकट हुआ। हिन्दी उपन्यास आधन्तिक युग की देन है। पश्चिम में उपन्यास की परंपरश का पारंभ हिन्दी उपन्यासों से बहत पहले हो चुका था। यहीं नहीं १८ जीं सदी के मध्यभाग में जहाँ पश्चिमी उपन्यास का स्वरूप स्थिर हो रहा था वहाँ १९ वीं सदी में हिन्दी

उपन्यास का प्रारंध होता है उपन्यास मानव जीवन की एक काल्पनिक कहानी है, जिसमें सामाजिक जीवन का भी यथार्थ रूप में चित्रण किया जाता है।

**संदर्भ ग्रन्थ सूची**

[1] जैनेन्द्र कुमार (1971). समय, समस्या और सिद्धान्त पूर्वोदय प्रकाशन, दिल्ली

[2] ग्रन्थम (1963). कानपुर, 1965 डॉ. रामविलास शर्मा आस्था और सौंदर्य किताब महल प्रकाशन, इलाहाबाद, प्रथम संस्करण

[3] सिंह (डॉ.) प्रिभुवन, हिन्दी उपन्यास : शिल्प और प्रयोग, हिन्दी प्रचारक संस्थान प्रकाशन, बाराणसी-!, प्रथम संस्करण : 973

[4] सिंह (डॉ.) लालसाहब, स्थातंत्योत्तर हिंदी उपन्यासों में युग-बोध, अभय प्रकाशन, कानपुर-2080!, संस्करण : 2005

[5] अल्मा कदूतरी, मैत्रेब्री पृष्या, राजकम्तल पेपरबैक्स, नई दिल्ली, सं० 2003

[6] आपका बंटी, मन्तू भण्डारी, रावाकृष्ण पेपरबैक्स, नई दिल्ली, सं० 2014

[7] इदजमस, मैत्रेती पुष्पा, राजकमल पेपरदैक्स, नई दिल्ली, सं० 2012

[8] प्रिया अंबिका (1988). भैरव प्रसाद गुप्त के उपन्यासों में सामाजिक चेतना, संतोष प्रकाशन, दिल्ली

[9] डॉ. नगेन्द्र (1967). काव्य-बिम्ब, नैशनल पब्लिशिंग हाऊस, दरियागंज, दिल्ली, प्रथम संस्करण-1967

[10] डॉ. गणपतिचन्द्र गुप्त (1994). साहित्यिक निबंध, लोकभारती प्रकाशन, इलाहाबाद, संस्करण